अन्हेर-नगरी

(भारतेन्दु हरिश्चन्द्र-विरचित प्रहसनक रूपान्तर)

अनुवादक :
प्रोफेसर प्रबोध नारायण सिंह, एम० ए०

मूल्य—५० पैसे

अन्हेर - नगरी

[भारतेन्दु हरिश्चन्द्र-विरचित प्रहसनक रूपान्तर]

अनुवादक :

प्रोफेसर प्रबोध नारायण सिंह

कलकत्ता विश्वविद्यालय,

कलकत्ता

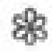
मूल्य— ५० पैसे

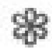
प्रकाशक :

मिथिला दर्शन प्राइवेट लिमिटेड

१४ बी, ब्रजनाथ मित्तर लेन,

कलकत्ता-६





प्राप्ति-स्थान :

लोक साहित्य परिषद्

१६२/८०, लेक गार्डेन्स,

कलकत्ता-४५



प्रथम संस्करण १०००

१९६५ ई०



मुद्रक :

मैथिली आर्ट प्रेस

६/१, खेलात घोष लेन,

कलकत्ता-६

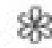
अन्हेर नगरी चौपट राजा।
टके सेर बथुआ टके सेर खाजा ॥

छेदश्चन्दनचूतचम्पकवने रक्षा करीरद्रुमे
हिंसा हंस-मयूर-कोकिलकुले काकेषु लीलारतिः।
मातङ्गेन खरक्रयः समतुला कर्पूरकार्पासयोः
एषा यत्र विचारणा गुणिगणे देशाय तस्मै नमः।

जाहि देशक गुणी लोकनि चन्दन, आम तथा चम्पाक वन कें काटि कए करील वृक्षक रक्षा करैत छथि; हंस, मोर तथा कोकिल कें मारि कए कौवाक लीला सँ प्रेम करैत छथि; हाथी द' कए गदहा किनैत छथि और कपूर तथा तूर कें एके समान बुझैत छथि ताहि देश कें नमस्कार करैत छी !

—:o:—

पुरुष - पात्र	स्त्री - पात्र
महंथजी	
नारायण दास—चेला	नारंगीवाली
गोबरधन दास—चेला	कुँजड़नी
कबाबवाला	माछवाली
घासीराम	
हलवाइ	
मुगल	
पाचकवाला	
जातिवाला (ब्राह्मण)	
बनियाँ	
सेवक	
राजा	
मंत्री	
प्रार्थी	
कल्लू	
कारीगर	
चूनवाला	
भिश्ती	
कसाइ	
गड़ेरिया	
कोतवाल	
पहिल सिपाही	
दोसर सिपाही	

अन्हेर - नगरी

पहिल अंक

●●●●

स्थान—वाह्य प्रान्त

नेपथ्य सँ मन्द स्वर मे क्यो गाबि रहल अछि :—

अन्हेर नगरी चौपट राजा ।
टके सेर बथुआ, टके सेर खाजा ॥

(महंथजी दू चेलाक संग गाबैत आबि रहल छथि ।)

सब—की करबऽ सुन्दर देहिया लऽ कऽ भजन नहि कैलऽ !

जौं तों भजन नहि कैल हैबऽ,
तँ माटिक ढेलवा बूँद पड़ैते गलि जैबऽ !
जौं तों भजन नहि कैल हैबऽ,
तँ माटिक बरतनमाँ टोनमा लगैते फुटि जैबऽ !
जौं तों भजन नहि कैल हैबऽ,
तँ तेलियाक बरदा, कोल्हुआ पेड़ैते मरि जैबऽ !
जौं तों भजन नहि कैल हैबऽ,
तँ धोबिया क गदहा, उसना लदैते मरि जैबऽ !

भुखला कें अन्न नहि देलऽ,
पियसला कें पानि नहि देलऽ,
एकवति किछु नहि बनैलऽ, भजन नहि कैलऽ !
की करबऽ सुन्दर देहिया लऽ कऽ भजन नहि कैलऽ !

महंथ—बच्चा नारायण दास, ई नगर दूर सँ त बड़ दिव्य बुझाइ पड़ैछ ! देख त, किछु भिच्छा-विच्छा भेंटै त ठाकुर-जीक भोग क ओरियाउन करी। की रौ ?

नारायण दास—गुरुजी महाराज, नगर त नारायणक इच्छा सँ बहुते सुन्दर छैक, किन्तु किदन कहलकै जे किच्छो जौं सुन्दर भेंटै तखन ने !

महंथ—बच्चा गोबरधन दास, तों पच्छिम दिस सँ जो आ' नारायण दास पूरब दिस सँ जा रहल अछि। देख, जौं किछु सिदहा-सामग्री भेंटै त श्री श्री शालग्रामजी क बाल-भोगक प्रबन्ध हो।

गोबरधन दास—गुरुजी, देखैत ने रहियौक जे हम कतेक राशि भिच्छा आनि कए ढेंगरा दैत छी ! एहि ठामक लोक सब तँ बड़ मालदार बुझाइछ ! अपने चिन्ता छोड़ि देल जाउ !

महंथ—बच्चा, बेसी लोभ नहि करी। देखिहें, हे—

(गीत गाबैत-गाबैत सभक प्रस्थान।)

पापक जड़ि ई लोभ अछि, लोभ मिटाबै मान।
लोभ करी जुनि भूलि कए, एहि मे नरक-निदान।

—::०::—

दोसर अंक



स्थान—बाजार

कवाबवाला—कवाब गरमागरम मसालादार—चौरासी मसाला, बहत्तर आँचक कवाब—गरमागरम मसालेदार! जे खाइथ से ठोर चाटथि आ' जे नहि खाइथ से जीह काटथि। कवाब लियह, कवाब क ढेर—दाम टके सेर?

घासीराम—चाना जोर गरम!

चाना बनाबथि घासीराम। जिनकर झोली मे दोकान।
चाना चुरमुर-चुरमुर बोलै। बाबू खैबा ले मुख खोलै।
चाना खावै तौकी मैना। बाजै निम्मन बनल चबेना।
चाना खाथि गफूरन, मुन्ना। जे छथि नमरी भित्तर-घुन्ना।
चाना चिबबछि सब बङ्गाली। घरमे खोखी खदखद खाली।
चाना भकसथि पंडित मुल्ला। जे सब झगड़थि खुलमखुल्ला।
चाना कीनथि हाकिम आला। हरदम चाहथि गड़बड़ झाला।
चाना जोर गरम! टके सेर! टके सेर!

नारंगीवाली—नारंगी ले नारंगी! बुटबल क नारंगी। रामबागक नारंगी, आनन्दबागक नारंगी। भाइ, नेमुआ

सन नारंगी। हमर मुनसा अछि हुरदंगी। केकरा चाही एहन संगी? नारंगी ले नारंगी। कमला नेमो। मिठका नेमो। रंगतोला ई समतोला। लीयह जल्दी भरि कए खोंइछा, नहि तँ कानब बौआ पाछां। टके सेर, नारंगी टके सेर!

हलुवाइ—जिलेबी गरमागरम। ले सेव, इमिरती, लड्डू, गुलाब जामुन, खुरमा, बुनियाँ, बरफी, रावड़ी, पेड़ा, कचौड़ी, दालिमोट, पकौड़ी, घेवर, गुपचुप। हलुवा ले हलुवा, मोहन-भोग! गुदगुद हलुआ, मोइनदार कचौड़ी, मारि चोभक्का! घी सँ गरक, चीनी मे तरल, चासनी मे चोभकल। ले मुंगवा लड्डू। जे खाय सेहो पचतावै, जे नहि खाय सेहो पचतावै। रेवड़ी कड़ाकड़, पापड़ पड़ापड़। एहन जाति हलुवाइ, जकर छत्तीस कोटि भाइ। जेना कलकत्ताक विलसन मन्दिरक भित-रिया तहिना अन्हेर नगरीक हमरा लोकनि। सब सामान ताजा, खाजा ले खाजा, टके सेर खाजा!

कुँजड़नी—ले धनिया, मेथी, पोरे-पालक, बथुआ-करमी, नोनियाँ, कुलफा, खेसारी, चना, सरिसवक साग। ले बैंगन, लौकी, कोंहड़ा, आलू, नेनुआँ, ओल, रामपरबल, मुरइ। ले आदि - मिरचाइ, लहसुन - पियाउज, टिकोला। ले फलसा, खिरनी, आम, लताम, नेबो, मटर, खेसारी, ओरहा। जेहन काजी तेहने पाजी। रैयत राजा, टके सेर खाजा। ले हिन्दु-स्तानक मेवा फूट आ' वैर।

मोगल—बादाम, पिस्ता, अखरौट, अनार, बिहीदाना, मुनक्का, किशमिश, अंजीर, आबजोश, आलूबोखारा, चिलगोजा, सेव, नाशपाती, अंगूरक पेटारी। हमर एहन मुलुक अछि जाहि मे अंगरेजो बहादुरक होश दुरुस्त भ' जाइत छन्हि। हिन्दुस्तानक आदमी लिक-लिक, हमर मुलुकक आदमी बमक-बमक! ले सब मेवा टके सेर।

पाचकवाला—

चूरन अलमवेद केर भारी। जेकरा कीनथि कृष्ण मुरारी।
हम्मर पाचक अछि पचलोना। खैने लगै न जादू टोना।
चूरन बनल मसालादार। सरिपहुँ आमिल केर बहार।
हमर चूरन जे क्यो खैता। हमरा छोड़ि कतहु नहि जैता।
हिन्दू-चूरन एकरहि नाम। बिलायत पूरन एकरहि काम।
चूरन जहिया सँ अछि आएल। देशक धन-बल सब निघटाएल।
चूरण अलमवेद केर खट्टा। सब क्यो ओढथि तानि दुपट्टा।
चूरन कीनथि नेता बन्दा। सरिपहुँ पचा लेथि सब चन्दा॥
चूरन अफसर सब जौं लेता। दू गुण रिशवत तुरत पचौता।
जौं भुसकोल छात्र क्यो किनता। लगलहि प्रोफेसर ओ' बनता।
जौं क्यो प्रेमी चूर्ण मँगौता। इच्छित प्रिया तुरत ओ पौता।
चूरन पचबथि लाला लोग। जिनका अकिल अजीरन रोग।
चूरन खाथि एडीटर जात। जिनका पेट पचै नहि बात।

चूरन साहेब लोकनि खेलन्हि। सौंसे हिन्द हजम क' लेलन्हि ! चूरन पुलिस-दरोगा आनथि। तैं कानून एको नहि मानथि। ले चूरन ढेरक ढेर। टके सेर, टके सेर।

माछवाली—माछ ले माछ ! टके सेर ! टके सेर पोठी, टके सेर भुन्ना।

पोठी टके के सेर बिकावै !
लाख टका के बाला जोवन, गँहिकी सब ललचावै।
नैन-मछरिया रूप-जाल मे, देखितहि जे फँसि आवै।
बिनु पानी मछरी ई बिरहिया, मिलै बिना औनावै।
पोठी टके के सेर बिकावै।

जातिवाला (ब्राह्मण)—जाति ले जाति; टके सेर जाति। एक टका दे, हम एखनहि अपन जाति बेच दैत छी। टाकाक लेल ब्राह्मण सँ धोबि भ' जाय आ' धोबि कें बाभन बना दी। टाकाक लेल जेहन कही तेहने व्यवस्था द' दी। टाकाक निमित्त झूठ कें साँच क' दी; टाकाक लेल ब्राह्मण सँ मुसलमान, टाकाक लेल हिन्दू सँ क्रिस्तान। टाकाक लेल हम धर्म आ' प्रतिष्ठा दुनू बेचि दी। टाकाक लेल फूसि गवाही द' दी। टाका हेतु पाप कें पुण्य मानी आ टकेक वास्ते नीच कें अपन पितामह बना ली। वेद, धर्म, कुल-मरजाद, यश, बड़प्पन सब टके सेर। ल' जाइत जाउ टके सेर। लुटा देलहुँ अनमोल माल। टके सेर, टके सेर। ल' जाउ।

बनियाँ—आँटा-दालि, लकड़ी, नोन-घी-चीनी, मसाला, चाउर टके सेर। सब माल टके सेर।

[बाबाजीक चेला गोबरधनदास अबैछ और बेचैवला सभक आवाज सुनि-सुनि कए खैवाक आनन्द मे बड़ प्रसन्न होइछ।]

गोबरधन दास—की हौ बनियाँ भाइ, आँटा की भाव छन्हु?

बनियाँ—टके सेर।

गोबरधन दास—आ' चाउर?

बनियाँ—टके सेर।

गोबरधन दास—आ' चीनी?

बनियाँ—टके सेर।

गोबरधन दास—आ' घी?

बनियाँ—टके सेर।

गोबरधन दास—सब टके सेर! सत्ये?

बनियाँ—हँ महराज, हम कि फूसि बजैत छी?

गोबरधन दास—[कुँजड़नीक लग जा कए] की हे, साग की दर?

कुजड़नी—बाबाजी, टके सेर। नेतुवाँ, मुरइ, धनियाँ, मिरचाइ, सब साग टके सेर!

गोबरधन दास—सब तिम्मन टके सेर! वाह-वाह! अति उत्तम! अति उत्तम! एतय सब किछु टके सेर?

[हलवाइक लग जा कए [की हौ, हलवाइ भाइ, मिठाइ की दर?

हलुवाइ—बाबाजी, बुनियाँ, हलुवा, पेंड़ा, जिलेबी, गुलाबजामुन, खाजा सब टके सेर।

गोबरधनदास—वाह! वाह!! अति उत्तम! कियैक, बच्चा, चुटकी त नहि ल' रहल छह? की सत्ये सब टके सेर छैक?

हलुवाइ—हँ बाबाजी, सब किछु टके सेर। एहि नगरीक चालिये एहने छैक। एतय सब किछु टके सेर बिकाइत छैक।

गोबरधन दास—बच्चा, एहि नगरीक नाम की थिकैक?

हलुवाइ—अन्हेर नगरी।

गोबरधन दास—और राजाक नाम?

हलुवाइ—चौपट राजा!

गोबरधन दास—वाह! वाह! अन्हेर नगरी चौपट राजा, टका सेर बथुवा टके सेर खाजा। [इयेह गाबैत-गाबैत आनन्द सँ नाचि-नाचि कए तुमड़ी बजा रहल अछि।]

हलुवाइ—त बाबाजी, किछु लेवा-देवाक विचार हो त लेल जाउ।

गोबरधन दास—बच्चा, भिक्षाटन क' कए इयेह सात पैसा आनने छी। साढ़े तीन सेर मधुर द' दे। एतबहि मे गुरु आ' चेला सब कें ढोंइयाँ ढकार भ' जेतन्हि। आनन्दें सब छकित भ' जेताह!

[हलुवाइ मधुर तौलैत अछि। बाबाजी मधुर नेने खाइत और "अन्हेर नगरी चौपट राजा" गाबैत जा रहल छथि।]

[यवनिका - पात]

तेसर अंक

●●●●

स्थान—जंगल

[एक दिस सँ महंथजी और नारायण दास "की करबऽ सुन्दर देहिया ल' कऽ" इत्यादि गाबैत आबि रहल छथि आ' दोसर दिस सँ गोबरधन दास "अन्हेर नगरी चौपट राजा" गाबैत प्रवेश क' रहल छथि।]

महंथ—बचा गोबरधन दास! बाज, की-की भिक्षा आनलें? गेठरी त भारी बुझाइत छौक!

गोबरधन दास—बाबाजी महाराज! ढेरक ढेर माल आनने छी। साढ़े तीन सेर त मधुरे अछि।

महंथ—देखियौक बचा! [मधुरक गेठरी अपना आगाँ राखि कए खोलैछ आ' देखैछ] वाह! वाह! बचा, एतेक राशि मधुर कतय सँ आनलें? कोन धर्मात्मा सँ भेंट भेलौक?

गोबरधन दास—गुरुजी महाराज! साते टा पैसा भीख मे भेंटल छल। ओही सँ एतेक मधुर कीनि कए आनने छी।

महंथ—बच्चा ! नारायण दास हमरा कहने छल जे एतय सब बस्तु टके सेर बिकाइत छैक, परन्तु तखन हम ओकर कथाक विश्वास नहि केने छलियैक। बच्चा, ई कोन नगरी थिकैक, एकर राजा के थिकैक जतय टके सेर बथुआ और टके सेर खाजा भेंटैत छैक ?

गोबरधन दास—अन्हेर नगरी चौपट राजा।
टके सेर बथुआ, टके सेर खाजा।

महंथ—तखन बच्चा ! एहन नगरी मे रहब उचित नहि, जतय टके सेर बथुआ और टके सेर खाजा हो ! कहबी सेहो छैक :—

सेत-सेत सब एक रंग, तूर कपूर समान।
एहन देश कुदेश मे, करब न बास सुजान ॥
कोकिल कौवा एक सम, पंडित मूरख एक।
बक हंसक व्यवहार मे, होइ न जतय विवेक ॥
सोनहुँ बरिसै सदति जौं, एहन चौपट देश।
बसी त संकट मे पड़ी, प्राणहु होमै शेष ॥

से बच्चा, चल एहि ठाम सँ। एहन अन्हेर नगरी मे हजारो मन मधुर जौं मोफतिये भेंटै त ओ कोन काजक ? एतय एकहु क्षण ठहरनाइ उचित नहि।

गोबरधन दास—गुरुजी, एहन त संसार भरि मे कोनो देशहि नहि अछि। टेंट मे दुइयो टा पैसा रहनहि [पेट हँसोथैत] अछोहि कए खा सकैत छी ! हम एहि ठाम सँ आब किन्नहु

नहि जाएब। आन-आन जगह दिन-दिन भरि खेखनिया काट्ठ तैयो पेटो धरि मोसकिले सँ भरत। कोनो-कोनो दिन उपासो क लेल बाध्य होमै पड़ैछ। से हम त एतय सँ आब टसकब नहि।

महंथ—देख बचा, पाछाँ पचतावै पड़तौक।

गोबरधन दास—अपनेक कृपा सँ कोनो दुःख व्यापित नहि हेतैक। हम त कहब जे अपने सेहो एही ठाम रहि गेल जाउक!

महंथ—हम त आब एहि नगर मे एकहु क्षण नहि रहब। देख, हमर बात मान, नहि त पाछाँ पचतावै पड़तौक। हम त जा रहल छी. परन्तु एतबा कहने जा रहल छियौक जे संकट मे फँसला उत्तर हमर स्मरण करिहें।

गोबरधन दास—प्रणाम गुरुजी, हम अपनेक स्मरण प्रतिदिन करब। हमर पुनः प्रार्थना जे अपने सेहो एतहि रहल जाय।

[महंथजी नारायण दासक संग जाइत छथि। गोबरधन दास थभड़ि कए बैसि जाइछ आ' मधुर भकोसि रहल अछि।]

[यवनिका-पात]

चारिम अंक

स्थान—राजसभा

[राजा, मंत्री तथा सेवकगण यथास्थान स्थित छथि ।]

एक सेवक—[चिकरि कए] पान लेल जाउ महाराज ।

राजा—[अकचका कए आसन सँ उठैत] की बाजलें ? सुपनखा आएल महाराज ! [पड़ाइछ]

मंत्री—[राजाक हाथ पकड़ि कए कनेक जोर सँ] नहि-नहि ! ई अनुरोध करैछ जे पान लेल जाउ महाराज ।

राजा—दुष्ट, लुच्चा, पाजी ! अनेरे हमरा डरा देलक । देखू त अदंक समा गेल ! मंत्री, एकरा एक सै कोड़ा लगबाउ त ?

मंत्री—सरकार एकर कोन दोष छैक एहि मे ? ने बड़ेबा पान लगा कए देतिहैक आ' ने ई बाजतिहै ।

राजा—अच्छा, त बड़बे कें दू सै कोड़ा लगाओल जाय ।

मंत्री—परन्तु सरकार, अपने 'पान लेल जाउ' सुनि कए त नहि ने डरल छलियैक । अपने कें तँ सुपनखाक नामे सँ डर भ' गेल । तैं सुपनखे कें दण्ड देल जाउ ।

राजा—[थरथरबैत] फेर वैह नाम? मंत्री, अहाँ बड़ बुड़ि छी। हम रानी कें कहि देबन्हि जे मंत्री बारम्बार अहाँक लेल सौतिनक व्यवस्था करबाक फेर मे छथि। खबास, खबास! दारू ...।

दोसर खबास—[एक सुराही सँ एक गिलास मे दारू ढारि कए दैत छन्हि] लेल जाउ महाराज, पीयल जाउ।

राजा—[मुह चमका-चमका कए पान करैछ और ला रौ!

[नेपथ्य सँ "दोहाइ सरकार, दोहाइ सरकार" ई शब्द सुनल जाइछ।] के चेंचिया रहल अछि? पकड़ि कए आन त!

[दू सिपाही एक प्रार्थी कें पकड़ि कए आनैछ।]

प्रार्थी—दोहाइ सरकार. दोहाइ! हमर न्याय हो।

राजा—चुप रह। तोहर न्याय त एतय एहन हेतौक जेहन यमराजोक ओहि ठाम नहि हेतौक गे—बाज, की भेलौक?

प्रार्थी—सरकार. कल्लू बनियाँक देबार गिर पड़लैक, से हमर बकरी बेचारी ओकरहि नीचा थकुचा भ' गेल। दोहाइ सरकार, न्याय हो।

राजा—[खबास सँ] कल्लू बनियाक देबार कें तुरत पकड़ि कए आन त।

मंत्री—सरकार, देबार कें नहि आनल जा सकैछ।

राजा—अच्छा, ओकर भाइ, बेटा, दोस्त, सर कुटुम जे हो तकरे पकड़ि आन गे।

मंत्री—महाराज, देबार इंट-चूनक होइत छैक; ओकरा भाइ-बेटा कतय सँ एतैक ?

राजा—अच्छा, त कल्लू बनियें कें पकड़ि कए ल' आवें। [सिपाही सब दौड़ि कए बनियाँ कें पकड़ि आनैछ] कियैक रौ कलुआ ? एकर लड़की, नहि-नहि बरकी कियैक दबि कए मरि गेलैक ?

मंत्री—बरकी नहि सरकार, बकरी।

राजा—हँ, हँ; बकरी कियैक मरि गेलैक ? बता; नहि त एखनहि फाँसी पर चढ़ा देबौक।

कल्लू—महाराज, एहि मे हमर कोनो दोष नहि। कारीगर एहन ने देबार बनौने छल जे गिर पड़ल।

राजा—अच्छा, एहि कल्लू कें छोड़ि दहक, कारीगर कें पकड़ि कए आनह। [कल्लूक प्रस्थान। लोक सब कारीगर कें पकड़ि कए आनैत छथि।] कियैक रौ कारीगर एकर बकरी कोना मरि गेलैक ?

कारीगर—महाराज, हमर कोनो दोष नहि, चूनवाला एहन ने चौपट चून बनौलक जे देबार गिर पड़लैक।

राजा—अच्छा, एहि कारीगर कें बजाबह, नहि-नहि; निकालह। ओहि चूनवाला कें बजाबह। [कारीगर निकालल जाइछ और चूनवाला बजाओल जाइछ।] कियैक रौ, खैर-सुपारी-चूनवाला ! एकर कुबरी कोना मरि गेलैक ?

चूनवाला—महाराज, हमर कोनो अपराध नहि, भिश्ती चून मे बेसी क' कए पानि उझलि देलकैक। ताही सँ चून किछु कमजोर भ' गेल हेतैक ?

राजा—अच्छा, चुन्नीलाल कें भगाबह, आ' भिश्ती कें पकड़ह। [चूनवाला निकालल जाइछ और भिश्ती कें आनल जाइछ।] रौ भिश्ती, तों एतेक पानि कियैक देलही जे एकर बकरी गिर पड़लैक और देबार दबि गेलैक।

भिश्ती—महाराज, एहि दीनक कोनो दोष नहि; कसाइ ततेक ने पैघ भिश्ती बना देलक जे ओहि मे बहुत अधिक पानि अँटि गेलैक।

राजा—अच्छा, कसाइ कें पकड़ि कए आनह आ' एहि भिश्ती कें निकालह त। [भिश्ती कें निकालि कए कसाइ कें आनल जाइछ।] रौ कसैया, तों मशक एतेक पैघ कियैक बनौलें जे देवार गलि गेलैक आ' बकरी दबि गेलैक ?

कसाइ महाराज, हमर कोनो अपराध नहि; गड़ेरिया हमरा हाथें बड़का भेंड़ा बेच देलक, तैं ओकर मशको पैघ भ' गेलैक।

राजा—अच्छा कसाइ कें भगावह आ' गड़ेरिया कें आनह। (कसाइ कें निकालि गड़ेरिया कें आनल जाइछ।) रौ डपोरशंख, एहन भेंड़ा कियैक बेंचलें जे बकरी मरि गेलैक ?

गड़ेरिया—महाराज, ओमहर सँ कोतवाल साहेबक

सवारी आवि रहल छलैक। से वैह देखबा मे हमरा छोट-बड़ भेंड़ाक ध्यान नहि रहल। हमर कोनो दोष नहि सरकार।

राजा—अच्छा, एकरा हँटाबह आ' कोतवाल कें मँगाबह त। (गड़ेरिया कें निकालि कए कोतवाल कें आनल जाइछ।) रौ कोतवाल, तों एहन शान-बान सँ सवारी कियैक निकाललें जे बड़का भेंड़ा बिका गेलैक आ' बकरीक गिरला सँ कल्लू बनियाँ पिचा कए मरि गेल ?

कोतवाल—महाराज, महाराज! हमर कोनो अपराध नहि; हम त नगरक प्रबन्ध क लेल जा रहल छलहुँ।

मंत्री—(स्वगत) लेह, ई त भेल अन्हेर! एहन नहि हो जे एही बातपर ई बुरिबक सम्पूर्ण नगर कें फाँसी पर लटका दैक वा भकसी झोंकि दैक। (कोतवाल सँ) से नहि, तों एत्तेक धूम-धड़का सँ सवारी कियैक निकाललें ?

राजा—हँ-हँ; से नहि; तों एत्तेक धूम धड़ाका सँ सवारी कियैक निकाललें जे ओकर बकरी दबि गेलैक।

कोतवाल—महाराज, महाराज! ......

राजा—चोप! किछु नहि सुनल जेतौक। पकड़ एकरा आ' टाँगि दे फाँसी पर। दरबार बरखास्त।

(एक दिस सँ अमला सब कोतवाल कें बान्हि कए ल' जाइछ आ दोसर दिस सँ मंत्री कें पकड़ने राजा जा रहल छथि।)

(यवनिका-पात)

पाँचम अंक

स्थान—अरण्य

(गोबरधन दास—गाबैत गाबैत आबि रहल छथि।)

अन्हेर नगरी चौपट राजा। टके सेर बथुआ टके सेर खाजा॥
नीच, भाँड़ आ' लम्पट जेहने। साधु संत आ' पण्डित तेहने॥
कुल-मरजादा भेल निपत्ता। मौगी मुन्सा सन अलबत्ता॥
वेश्या जोरू एक भेलैये। बकरी जेकाँ गाय बिकैये॥
साधु-संत सब बुरिबक बनला। छली-दुष्ट राजा बनि चलला॥
साँच कही तँ पनही लागै। झूठ बनी तँ भाग्यहि जागै॥
प्रगट सभ्य अन्तर छलधारी। सभा-मध्य पूजित से भारी॥
भीतर होइ मलिन वा कारी। बाहर बगुला चानन-धारी॥
भीतर स्वाहा बाहर सादा। राज करथि अमला आ' प्यादा॥
अंधाधुन्ध मचल अछि भारी। रक्षक सूतल ठोकि केबाड़ी॥
गो-द्विज-श्रुति आदर के जाने? बूझू राज विधर्मी आने।
अन्हेर नगरी चौपट राजा। टके सेर बथुआ टके सेर खाजा॥

(खूब ठूँसि ठूँसि कए मधुर खा रहल अछि।) गुरुजी हमरा अनेरे मना केने छलाह जे एतय नहि रही। मानल कि

देश बड़ खराब अछि, किन्तु ताहि सँ की ? हम कोनो राज-काज मे थोड़े छी जे डर हैत ? रोज मधुर भकसैत छी आ' साँढ़ जकाँ अफरति रहैत छी। हमरा चिन्ते कोन ! बम भोला ! हर-हर महादेव !

(मधुर खा रहल अछि। तखनहि चारि गोट सिपाही चारू कात सँ आबि कए चलान क' लैत छन्हि।)

पहिल सिपाही—चल रे, चल्ह। बड़ मधुर ठूँसि-ठूँसि कए चकेत्ता भ' गेल छें ! आइ पूर्ण भ' गेलौक !

दोसर सिपाही—बाबाजी चलियौक ने ! नमो नारायण करू, नमो नारायण !

गोबरधनदास—(व्याकुलता-पूर्वक) रौ तौरी ! ई बिपत्ति कतय सँ आबि गेल ? हौ भाई, हम तोहर की भँगठौने छियह जे हमरा पकड़ि रहल छह ?

पहिल प्यादा—अपने भँगठौने छियैक कि बनौने छियैक ताहि सँ कोन काज ? आब चल्ह , फाँसि पर चढ़ियौक गे ?

गोबरधनदास—फाँसी ? अरे बाप रे बाप, फाँसी ? हम केकर खजाना लुटने छी जे फाँसी पड़ि रहल अछि ? हम केकर हत्या केने छी जे ई ....

दोसर सिपाही—अपने बहुत मोट छियैक। तैं फाँसी भ' रहल अछि।

गोबरधनदास—मोट हेबाक कारणें फाँसी ? ई कोन ठामक न्याय भेलैक ? अरे, साधु-फकीर सँ ठट्ठा जुनि करी सिपाही जी !

पहिल सिपाही—जखन शूली भ' जाएत तखन बुझबैक जे ठट्ठा छलैक कि की? सोझ-सोझ चलब कि घिसिया कए ल' चलहुँ?

गोबरधनदास—अरे बाप रे बाप! बौआ, कियेक बेकसूर क प्राण ल' रहल छह? भगवानक ओहि ठाम की जवाब देबहक?

पहिल सिपाही—भगवान क जवाब राजा देथिन्ह गे। हमरा सब कें कोन मतलब? हमरा लोकनि कें तँ आज्ञा-पालन करबाक अछि।

गोबरधनदास—तैयो, बात की थिकैक बौआ? कियैक एहि साधु कें अनेरे फाँसी देल जेतैक?

पहिल सिपाही—विषय ई छैक जे कालिह कोतवाल कें फाँसीक हुकुम भेल छलैक। फाँसीक लेल ओकरा ठाढ़ करा-ओल गेलैक त फाँसीक फन्दा ओकरा गरदनि सँ पैघ भ' गेलैक, कियैक त कोतवाल साहेब दुब्बर छलाह। हमरा लोकनि महाराज कें सूचित केलियैक त हुकुम भेलैक जे कोनो मोट आदमी कें पकड़ि कए फाँसी पर चढ़ा देल जाय, कियैक त बकरीक हत्याक अपराध मे कोनो ने कोनो आदमी कें दण्डित भेनाइ अनिवार्य छैक। से नहि भेने न्याय नहि भ' सकतैक। अपने कें एही लेल ल' जा रहल छी जे कोतवाल क बदला मे फाँसी पर झुला दी।

गोबरधन दास—त की एहि नगर भरि मे आन कोनो मोट लोक नहि भेंटल जे एहि अनाथ फकीर कें फाँसी द' रहल छी ?

पहिल सिपाही—एहि मे दू बात छैक --एक त ई जे एहि नगर भरि मे राजाक न्यायक डर सँ क्यो चिकनैते नहि छैक आ' दोसर ई जे आन केकरो पकड़ने कदाचित् बात बना-बना कए ओ हमरहि सभक ने ध्वंस क' दियै। तकर अतिरिक्त एहि राज मे त साधुए सन्तक दुर्गति ने छैक ! सब दृष्टिएँ अहाँ फाँसीक लेल बड़ उपयुक्त छी।

गोबरधन दास—दोहाइ परमेश्वर क ! दयालु औढर-दानी ! अनेरे एहि दीनक प्राण जा रहल अछि। हाय ! एतय त बड़ अन्हेर छैक। हम गुरुजी महाराजक बात नहि मानलहुँ तकरे फल आब भेंटि रहल अछि। हाय रे दैव ! गुरुजी, औ गुरुजी ! कतय छी औ गुरुजी ! प्राण बचाउ औ गुरुजी ! हाय रे हाय ! आइ हमर प्राण गेल। एहि निरपराध कें बचाउ औ गुरुजी ! गुरुजी, गुरुजी !

[गोबरधन दास चिकरैछ आ' सिपाही सब ओकरा धकिया-धकिया कए ल' जाइछ।]

[यवनिका पात]

छठम अंक

स्थान—श्मशान

[गोबरधन दास कें पकड़ने चारि सिपाहीक प्रवेश]

गोबरधन दास—हाय बाप रे! एहि निरपराध कें फाँसी! जे खेलहुँ सेहो निकलि गेल। अरे भाइ, किछुओ त धरमक विचार करैत जा। अरे, एहि दीन कें फाँसी द' कए की भेटतहु? हौ, हमरा छोड़ि ने दे! हाय रौ दैव! [कानैछ आ छोड़ैबाक यत्न करैछ।]

पहिल सिपाही—ईह! चुहाड़ नहि तन! चुप रह ने। वरंच राम-नाम ले। राजाक हुकुम कखनहु टलि सकैत अछि? ई अन्तिम बेर छियौक। हल्ला बन्द क' कए रामक नाम ले।

गोबरधन दास—हाय! हाय!! हम गुरुजीक बात काटबाक फल भोगि रहल छी! ओ कहने छलाह जे एहन नगर मे रहब उचित नहि। किन्तु हम पेटू, हम मूर्ख; हम हुनक बात नहि सुनलियन्हि। अरे, एहि नगरेक नाम जखन अन्हेर नगरी

छियैक आ' राजाक नाम चौपटराज छियैक तखन बचबाक कोन आस ? की एहि नगरी मे एहन कोनो धर्मात्मा अछिये ने जे एहि असहाय क रक्षा करै ? गुरुजी, कतय छी औ गुरुजी ! बचाउ, बचाउ ! गुरुजी, गुरुजी !

[गोबरधन दास भोकारि पाड़ि-पाड़ि कए कानि रहल अछि । सिपाही सब ओकरा घिचैत-तीरैत आ' धकियाबैत-मुकियाबैत ल' जा रहल अछि ।]

[तखनहि गुरुजी और नारायण दासक प्रवेश ।]

गुरुजी—अरे, बच्चा गोबरधन दास ! तोहर एहन दुर्दशा !

गोबरधन दास—[हाथ जोड़ि कए खेखनी करैत] गुरुजी ! देवारक तर मे बकरी दबि गेलैक । तैं हमरा फाँसी देल जा रहल अछि । आब अहीं बचा सकैत छी ।

गुरुजी—रौ बच्चा, हम त पहिनहि कहने छलियौक जे एहन नगर मे रहब उचित नहि । तों हमर कथा कें ग्राह्य ने केलें !

गोबरधन दास—तकरे फल पाबि रहल छी । ज्ञानी, गुणी आ' गुरुक कथा नहि सुनने की होइत छैक से हम आब बूझि रहल छी । किन्तु अपने हमरा नहि देखब त हमर उद्धार नहि भ' सकैछ । हम अपनहिक शरण मे छी । अपनेक अतिरिक्त हमर और क्यो नहि । [पैर पर खसैछ आ' भोकारि पाड़ि कए कानैछ ।]

गुरुजी—कोनो चिन्ता नहि । भगवान् मालीक ! [भौं चढ़ा कए सिपाही सब सँ] सुनह, हम अपन चेला कें अन्तिम

उपदेश देब; तों सब कनेक फराके हँटि कए ठाढ़ भ' जाइत जा। हे, हमर बात सुनने नीक नहि होतह !

सिपाही सब—नहि महाराज ! हमरा लोकनि हँटि जाइत छी। अपने अवश्य उपदेश देल जाउ।

[सिपाही सब हटि कए ठाढ़ होइत छथि। गुरुजी चेलाक कान मे किछु कहि रहल छथि।]

गोबरधन दास—[प्रगट] तखन त गुरुजी, हम एखनहि फाँसी पर चढ़ब।

गुरुजी—नहि बचा, हमहीं चढ़ब फाँसी पर।

गोबरधन दास—नहि गुरुजी, हम फाँसी पर चढ़ब।

गुरुजी—नहि बचा, हम। कतेक बुझैलियौक तैयौ नहि मानैत छें ? हम बूढ़ भेलहुँ, हमरा जाय दे।

गोबरधन दास—स्वर्ग जैवा मे बूढ़ की आ' जवान की ? अपने त सिद्ध पुरुष छी; अपने कें गति-अगति सँ की ? हम ही फाँसी पर चढ़ब।

गुरुजी—नहि रौ बचा, हम चढ़ब।

गोबरधन दास—नहि, हम चढ़ब।

[एहि प्रकारें दुनू व्यक्ति हुज्जति क' रहल छथि—सिपाही सब कें आश्चर्य भ' रहल छैक।]

पहिल सिपाही—ई की भ' रहल छैक, से बुझबा मे नहि आबि रहल अछि !

दोसर सिपाही—हमरो नहि बुझाइछ जे ई की गड़बड़ भ' रहल छैक ?

[राजा, मंत्री और कोतवालक प्रवेश]

राजा—ई की गोलमाल भ' रहल अछि ?

पहिल सिपाही—महाराज, चेला कहैत अछि जे हम फाँसी पर चढ़ब और गुरु कहैत छथि जे हम चढ़ब। किछु बुझवा मे नहि आबि रहल अछि जे बात की छियैक !

राजा—[गुरुजी सँ] बाबाजी, बाजू त। अपने कियैक फाँसीक कामना क' रहल छी ?

गुरु—एखन एहन मुहूर्त्त बीति रहल छैक कि जे मरत से सोझे बैकुंठे जाएत।

मंत्री—तखन त हमही फाँसी पर चढ़ब।

गोवरधन दास—हम, हम। हमरा हुकुम भेंटल अछि फाँसी क।

कोतवाल—हम झूलब फाँसी पर। हमरे कारणें त देबार गिरलैक।

राजा—चुप रहैत जाउ सब लोक। राजा क अछैत केकर मजाल जे ओ बैकुंठ जाएत ! हम फाँसी पर चढ़ब ! जल्दी, जल्दी ! ला फन्दा।

[राजा कें सिपाही सब तखता पर ठाढ़ करैत छन्हि]

गुरु—जतय न धर्म न बुद्धि नहि, नीति न सुजन-समाज।
से एहिना अपनहि नसै, जेहन चौपट राज ॥

पटाक्षेप

—::❀::—